SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) :2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 3, Issue-3, April-May-June : 2025
Published by Rangmati Publication https://www.rangmatipublication.com/

नाटक 'इला' में युवा पात्रों की मानसिकता

प्रा. रामहरि काकडे

भारतीय समाज में धार्मिक दृष्टि से स्त्री को देविरूप में देखा गया है।कुछ अपवादों को छोड दे तो आधुनिक काल के प्रारंभ तक भारतीय स्त्री की स्थिति दिन हीन ही रही है। अंग्रेज शासनकाल में हुए सामाजिक सुधार आंदोलन के कारण पहली बार भारतीय स्त्री की स्थिति में सुधारना का प्रयास किया गया।किंतु इस सुधार आंदोलन की गति बहुत कम थी।सन 1991 ई. की मुख्य आर्थिक नीति एवं उससे भारत में उपजे वैश्वीकरण के कारण व्यक्ति स्वतंत्रता का महत्व बड़ा।फलस्वरूप भारतीय स्त्री पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर काम करने लगी।इस प्रयास में उसे विभिन्न रुकावटों का सामना करना पड़ा।यह रूकावटें एक औरत के लिए नहीं तो समस्त स्त्री वर्ग के लिए थी। इसलिए पढ़ी-लिखी एवं जागृत स्त्री ने इस का रूकावटों के विरोध में एक आंदोलन चलाया।जिसे बहुत सारे पुरुषों ने भी समर्थन दिया। यह आंदोलन जीवन के सभी क्षेत्रों में था। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। अन्य साहित्यिक विधाओं के समान नाट्य विधा में भी स्त्री विमर्श का दौर चल पड़ा। संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन 1975 ई. को जागतिक महिला वर्ष घोषित किया इसके परिणाम स्वरूप इस आंदोलन को और अधिक गति प्राप्त हुई। वैसे कहा जाए तो स्त्री मुक्ति का स्वरूप नाट्य विधा के प्रारंभ से ही दृष्टिगत होता है।भारतेंदु का नाटक 'नीलदेवी' की नायिका नीलदेवी के माध्यम से वीरता एवं सशक्त नारी का चित्रण किया है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के परिणाम स्वरुप प्रसाद काल में त्याग एवं बलिदान आदि गुणों से युक्त नारी पात्रों का चित्रण किया गया है। "नारी राज्य की सीमा विस्तृत है और पुरुष की संकीर्ण।कठोरता का उदाहरण है पुरुष और कोमलता का विश्लेषण स्त्री जाति।पुरुष क्रूरता है तो स्त्री करूणा है।"[1] आधुनिक स्त्री विमर्श के संदर्भ में 'ध्रुवस्वामिनी' की नायिका ध्रुवस्वामिनी महत्वपूर्ण है।अपने ऊपर हो रहे अन्याय का विरोध करने वाली ध्रुवस्वामिनी पुरुषों के अधिकारों को चुनौती देती हुई कहती है, "पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु - संपत्ति समझ कर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है।"[2] प्रसाद ने ध्रुवस्वामिनी के माध्यम से नारी जागरण, विधवा विवाह, स्त्री अधिकार एवं स्त्री स्वतंत्रता के प्रश्न उठाए हैं।

डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय का नाटक 'इला' श्रीमद्भागवत की कथा पर आधारित है। इसमें मनु की इच्छा के विपरीत श्रद्धा को इला नामक पुत्री हो जाती है। लेकिन मनु के इच्छा अनुसार राजगुरु वशिष्ठ उसे पुत्र में बदलते है। इस लिंग रुपांतरण प्रक्रिया के समय और बाद में पुत्री इला से पुत्र सुद्युम्न बनने वाले नायक को जो भयावह यातना, अंतर्द्वंद्व भोगना पडता है और वह उसका प्रतिकार कैसे करता है यही नाटक का कथ्य है।नाटक का प्रारंभ ही इला के जन्म से होता है। महाराज मनु अपने राज्य के उत्तराधिकारी के लिए वशिष्ट द्वारा पुत्रकामेष्टि यज्ञ करते है लेकिन गर्भ धारण करनेवाली माता की इच्छा के अनुसार पुत्रकामेष्टि यज्ञ के पश्चात महाराणी श्रद्धा को पुत्री प्राप्त होते ही महाराज मनु अपना षडयंत्र प्रारंभ करते है। राजसत्ता के लिए उत्तराधिकारी, पूजा पर अपना शासन बनाए रखने के लिए महाराज मनु वशिष्ठ के साथ मिलकर इला के लिंग परिवर्तन की योजना बनाते है।इसी योजना से प्रारंभ होता है एक षडयंत्र जिसमें नाटक के प्रमुख युवा पात्रों को मानसिक यातनाओं से गुजरना पडता है।

प्रा. रामहरि काकडे, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, महिला महाविद्यालय गेवराई, जिला - बीड (431127), भ्रमणध्वनी : 09850441267, अनुप्रेष : ramkakde7@gmail.com

नाटक की नायिका इला नाटक की प्रमुख युवा पात्र है। वह नायिका होकर कथानक का केंद्रीय बिंदु है। इला जन्म से ही मानव और प्रकृति की संघर्ष का बिंदु रही है। उसका जन्म माता श्रध्दा के इच्छा के अनुसार होकर भी पिता महाराज मनु उसे नहीं चाहते क्योंकि उन्हें तो राज्य के उत्तराधिकारी के लिए एक पुत्र चाहिए था। इसिलए वे पुत्री का लिंग परिवर्तन कर उसे सुद्युम्न बनाने की योजना बनाते है। जिसमें सत्ता और अधिकार को आधार बनाकर राजगुरु वशिष्ठ को भी सम्मिलित करते है। दूसरों की लडकियों को जी-जान से प्यार करनेवाले मनु पुत्री जन्म की खबर सुनते ही बौखला चठते है। " ...तो यह बात है... सारी दूर्घटना की जड है - महाराणी। अब तक मै जिसे अपना संपूर्ण प्रेम देता रहा, वह सर्पिणी निकली। स्त्री के चरित्र को देव भी नहीं जान सकते। कृतघ्न, नीच (दाँत पिसते है) ।"

वस्तुतः देवी जैसी श्रद्धा पर महाराज मनु विश्वासघात का आरोप लगाते है। श्रद्धा ने तो बडे मन से अपने पति के हीत को सर्वोपरि मानकर पुत्रकामेष्टि यज्ञ के समय पुत्री की कामना की थी क्योंकि श्रद्धा समझती थी कि, महाराज मनु लडकियों से बहुत प्रेम करते है। " श्रद्धाः क्या मै कन्याओं के प्रति आपकी प्रिति नहीं जानती? मनु : दूसरों की कन्याओं से प्रेम करना और अपने लिए कन्या चाहना दो अलग बाते है देवी।" [4] इस तरह का दोहरा व्यक्तित्व केवल राजनीति में ही हो सकता है। वस्तुतः मनु ना श्रध्दा की मानसिकता को समझते है ना उस कोमल शिशु की मानसिकता को समझते है। माता श्रद्धा ने पती की इच्छा समझकर ही पुत्रकामेष्टि यज्ञ में पुत्री की कामना की थी। क्योंकि वह मनु की राजनीति न समझकर उस राजनीति को असलियत ही समझती थी। इसलिए उसे और पुत्री इला को अपार मानसिक यंत्रणाओं से गुजरना पडा। जब राजगुरु वशिष्ठ राजाज्ञा का पालन करने के लिए विवश होकर इला के लिंग परिवर्तन प्रारंभ करते है तब हताश श्रद्धा का कथन है, " प्यारी बेटी इला ! आज मै तुझे सदा के लिए विदा दे रही हूँ... आझ से तेरी कोमल काया पर अमानवीय प्रयोग होंगे, घोर रासायनिक अनुष्ठान होगा। ...राजा को, प्रजा को, धर्म को एक उत्तराधिकारी, एक शासक, एक संरक्षक मिल जाएगा - लेकिन खो जाएगी मेरी बेटी ' इला ' सदा के लिए...।" [5]

श्रद्धा का माता रुप महाराज मनु की राजसत्ता एवं षडयंत्र के सामने पराजित होता है। किंतु उसकी ममता तो सदा के लिए आहत होती है और उसकी यह मानसिकता नाटक के अंत तक बनी रहती है। उसके सामने इला का लिंग रुपांतरण कर उसे सुद्युम्न बनाया जाता है। इला का लिंग तो परिवर्तीत हो जाता है लेकिन उसकी कोमल भावनाओं का क्या हुआ होगा? यह तो इला, सुद्युम्न और माता श्रद्धा की मानसिकता से ही स्पष्ट हो जाता है। इस अमानवीय घटना से इन तिनों के भावविश्व को झकझोर दिया। इला की यातनाओं को देखकर बुद्धिमान, पतिव्रता श्रद्धा का मन पश्चाताप से भर उठता है। वह प्रतिशोध भावना से जल उठती है, " श्रद्धा : (अपनी रौ में) ...और मै अपने वध के लिए प्रस्तुत हूँ। (घोषणा करती -सी) परंतु सुन लिजिए आप...श्रद्धा प्रतिज्ञा करती है कि, वह दुबारा माँ नहीं बनेगी; वह राजवंश के छल को अपने रक्त से नहीं पालेगी।..प्यारी बेटी इला! आज मै तुझे सदा के लिए विदा दे रही हूँ। तेरे लिए सजाए सपने अपनी आत्मा के हवन-वेदी में भस्म कर रही हूँ।" [6] पुत्री इला को भी अपार यातनाओं से गुजरना पडता है। जहाँ कोमल भावनाओं से युक्त इला को फुलों से खेलने का मन करता है वही इला रुपी सुद्युम्न भी इस खंडित व्यक्तित्व का शिकार हो जाता है। सुद्युम्न इला से सुद्युम्न तो बना पर वह कोमल भावनाओं को नहीं त्याग सका। अर्थात वह संपूर्ण रुप से पुरुष न बनकर आधा स्त्री और आधा पुरुष ही बन गया। जहाँ महाराज मनु सुद्युम्न को घुडसवारी और जंगल में आखेट कराने के लिए कहते तब उसे फुलों और लताओं से खेलने का मन करता है। "सुद्युम्नः(विवशता से) मै क्या करु माँ? जाने क्या हो जाता है मुझे? मन चाहता है, धनुष-बाण फेंककर फूलों से खेलूँ, लताओं से बतियाऊ, (अभिनय सहित) हवाओं में उडूँ।" [7] इतना ही नहीं तो जब सुद्युम्न का विवाह सुमति से होता है तो सुद्युम्न की दोहरी मानसिकता का प्रभाव उसपर भी पडता है। सभी पत्नियों के समान वह भी चाहती है कि, उसका पति शौर्यवान बने, अपने पिता से प्राप्त राज्य में बढोत्तरी करे। किंतु सुद्युम्न को तो राजपाट में कोई रुचि नहीं है। इसलिए प्रजा भी उसे कोसती है तब सुमति कहती है कि, "आप अंतपुर में बैठ जाइए मै शासन

चलाती हूँ।आप इतना भी देख सकते कि, प्रजा और साधारण कर्मचारी आपकी खिल्ली उडाता है।धूल में मिल चुकी है आपकी प्रतिष्ठा।" [8] इला और सुद्युम्न के संघर्ष में सुमति को यातनाएं सहनी पडतु है।श्रद्धा के समान ही सुमति एक कर्तव्यनिष्ठ बुद्धिमान धर्मपत्नी होकर भी पराजित, अपमानित जीवन जीने के लिए विवश है।सुद्युम्न स्त्री-पुरुष की युध्दभूमि के अतिरिक्त शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष की रणभूमि भी बन जाता है।" वशिष्ठ : केवल स्त्री पुरुष की ही नहीं, सूर्य और चंद्र की भी।अरुधंती : क्या कहते है? योगवशिष्ठ की कोई सूक्ति है क्या यह? वशिष्ठ : नहीं, यह जलता हुआ सत्य है।वह जन्म से सूर्यवंशी है, परंतु इला के रुप में वह चंद्रवंश की वधू थी।जिसमें चंद्रवंश ने अपना बीज बो दिया था।अरुधंती : तो क्या अब भी चंद्रवंश का प्रभाव है उस पर?

वशिष्ठ : हाँ, शुक्ल - पक्ष अपनी कलाओं के साथ सुद्युम्न के स्त्री - तत्व को उत्तेजित करता है।पूर्णिमा को वह निरा स्त्री रह जाता है जिसमें पुरुष - तत्व होता ही नहीं।कृष्ण - पक्ष में सूर्य उसे पुरुष - पंक्ति में खींचने लगता है और अमावस्या को वह एक ऐसा पुरुष रह जाता है जिसमें दूर- दूर तक स्त्री का पता नहीं होता।' [9]

निष्कर्ष रुप से कह जाए तो श्रोत्रिय का नाटक इला के सभी युवा पात्र मानसिक यंत्रणा भोगते है। संपूर्ण नाटक में तणाव दिखाई देता है।श्रद्धा, इला , सुद्युम्न, अरुधंती मनु इ. सभी पात्र अपनी-अपनी मानसिकता में बद्ध है।मनु सत्ताधारी मानसिकता से युक्त है जो सत्ता एवं धर्म को हथियार बनाकर जो चाहे करना चाहता है तो श्रद्धा राजमाता होकर भी स्त्री होने के कारण मानसिक रुप से प्रताडित है और मानसिक यंत्रना भोगने के लिए विवश है। किंतु वह भी माँ न बनने की प्रतिज्ञा लेकर एक प्रकार से राजसत्ता को आवाह्न देती है।वही सुमति सभी गुणों से युक्त ह्कर भी पति के कारण स्वयं को अपमानित महसूस करती है। सुद्युम्न और इला तो मानव और प्रकृति की प्रयोगशाला या युध्दभूमि ही बन गए है।परिणामतः वह दोनों रुपों में मानसिक यंत्रणा भोगने के लिए विवश है। अतः कह सकते है कि, " मनु, श्रद्धा और सुद्युम्न के बीच तनावपूर्ण स्थितियां, मनु की कुंठा तथा श्रद्धा और सुद्युम्न की वेदना तथा करुणा में हम आज के विश्व में व्याप्त विसंगति का झकझोर देने वाला अनुभव पाते है।' [10] प्रस्तुत नाटक में मिथकीय कथानक के माध्यम से वर्तमान समय की समस्या लिंग रुपांतरण की समस्या, राजनीति और धर्म की मिलीभगत, स्त्री स्वतंत्रता का प्रश्न आदि प्रश्नो को उजागर किया है।नाटक में सत्ता और अधिकार के लिए एक माता, एक पुत्री, बहु इनकी स्वतंत्रता का हनन कर उन्हें मानसिक यंत्रणा सहने के लिए विवश किया जाता है। लेकिन इससे कोइ भी नहीं बच सका।महाराज मनु, राजगुरु वशिष्ठ, अरुधंती, श्रद्धा, सुद्युम्न, इला, सुमति सभी इस भँवरे में फँसते है।सभी अपनी मानसिक यंत्रणा में जी रहे है।" जीवन - भर दो तलवारों की नोक के बीच उडने वाली चिडिया की तरह लगातार छटपटाते हुए जीने तथा देह और बोध की द्विधाविदीर्ण मानसिकता को झेलते रहने के लिए अभिशप्त इला/प्रद्युम्न की यह नाट्य-कथा पुरुरवा के राज्यभिषेक पर समाप्त होकर वंशोन्माद और वंशाधिकार के विरुद्ध विद्रोह को रेखांकित करके विकृति पर प्रकृति की अंतिम विजय का जयघोष करती है।' [11]

संदर्भ सूची

1) अजात शत्रु - जयशंकर प्रसाद पृ.क्र.125
2) ध्रुवस्वामिनी - जयशंकर प्रसाद पृ.क्र. 28
3) इला - प्रभाकर श्रोत्रिय पृ 34
4) वही पृष्ठ क्र. 37
5) वही पृष्ठ क्र. 42
6) वही पृष्ठ क्र. 41 - 42
7) वही पृष्ठ क्र. 48
8) वही पृष्ठ क्र. 61

9) वही पृष्ठ क्र. 100-101
10) मिथक पुनर्सृजन इला और प्रभाकर श्रोत्रिय का रंग संसार
संपादक - डॉ. विभु कुमार डॉ. रूपाली चौधरी पृष्ठ क्र. 35
11) वही पृष्ठ क्र. 26